16-04-2020 08:45

16/04/2020

Subject - Gender, School and Society

B.Ed. 2nd Year

Period - 4th

Topic

यौन एवं प्रजनन अधिकारों मे अन्तर

यौन अधिकार	प्रजनन अधिकार
(1) इन अधिकारो को मानव-अधिकार मे सम्मीलित किया गया है। जिसे अन्तर्राष्ट्रीय मानव अधिकारो के तहत मान्यता प्राप्त है।	(1) इन अधिकारो को कुछ निश्चित सीमा के अन्तर्गत मानव अधिकारो मे शामिल किया गया है।
(2) इसमें सभी मानवो को सम्बन्ध स्थापित करने की स्वतन्त्रता प्राप्त है।	(2) इसके अन्तर्गत बच्चो की संख्या, उनका समय तथा उनके बीच की अवधी निर्धारित करने की स्वतन्त्रता प्राप्त है।
(3) इन अधिकारों मे यौन अधिकारों के लिए संघर्ष भी शामिल किया गया है।	(3) ये वैधानिक अधिकार है इनके अन्तर्गत प्रजनन तथा प्रजनन स्वास्थय को शामिल किया गया है।
(4) इसके अन्तर्गत व्यक्ति विशेष की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को सम्मीलित किया गया है।	(4) इन अधिकारों के अन्तर्गत यौन सम्बन्धी स्वास्थय, जीवन का अधिकार तथा व्यक्ति की सुरक्षा को सम्मीलित किया गया है।

उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि दोनो ही अधिकारो मे सम्बद्धता एवं अन्तर दोनो पाए जाते है, एवं दोनो ही अधिकार व्यक्ति के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

लैंगिकता - Sexuality

लैंगिकता का शाब्दिक अर्थ 'लिंग वर्गो' से है, परन्तु इसकी अवधारणा के गहरे निहितार्थ है।

लैंगिकता एक प्राकृतिक एवं स्वाभाविक क्रिया है। लैंगिकता पुरूष एवं महिला के विचारो, कल्पनाओं एवं इच्छाओं, विश्वासो, दृष्टिकोणो मूल्यो, व्यवहारो, प्रथाओ एवं रीती - रिवाजों सहित विभिन्न तरीको से व्यक्त किया जा सकता है।

लैंगिकता जैविक, शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पहलुओ के रूप मे प्रकट हो सकता है।

लैंगिकता पर हमारी इन्द्रियो का विशेष प्रभाव पड़ता है। एवं इसका प्रभाव सांस्कृतिक, नैतिक, धार्मिक आदि सभी पहलुओ पर दिखायी पड़ता है।

बालकों में लैंगिकता का विकास :-

Development of sexuality of children :-

विकास की अवस्थाएँ - Stages of Development :-

विकास प्राणी मे "प्रगति सूचक" परिवर्तन का "पर्याय जो उसे एक लक्ष्य की ओर निर्देशित करता है।

व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का विकास विभिन्न अवस्थाओ मे होता है जिसे बहुत से कारक प्रभावित करते है। जैसे - वशांनुक्रम, पौष्टिक भोजन, लिंग भेद, अन्तःस्त्रावी - ग्रन्थियां व पारिवारिक परिस्थितियाँ आदि।

विभिन्न मनोवैज्ञानिको ने विकास की भिन्न - भिन्न अवस्थाओं को बताया है। मतभेदो के चलते सभी ने अपने - अपने अनुसार इसका वर्गीकरण किया है।

16-04-2020 08:45

अर्नेस्ट जोन्स का वर्गीकरण :-

जोन्स ने विकास की अवस्थाओं को चार भागों में बाटाँ है।

(1) शैशवावस्था – जन्म से 5 या 6 वर्ष तक

(2) बाल्यावस्था – 6 वर्ष से 12 वर्ष तक

(3) किशोरावस्था – 12 वर्ष से 18 वर्ष तक

(4) प्रौढ़ावस्था – 18 वर्ष से बाद की आयु का समय

लेकिन बालक के जीवन से सम्बन्धित दो अवस्थाएं शैशवावस्था, एवं बाल्यावस्था ही अधिक महत्वपूर्ण है।

विकास को प्रभावित करने वाले कारक

बालक के जीवन के प्राथमिक प्रभाव व लैंगिकता के विकास का क्रमबद्ध अध्ययन करने के लिए बालक को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन भी महत्वपूर्ण है। जो निम्नलिखित है –

(1.) पर्यावरण का प्रभाव :- पर्यावरण सम्बन्धी निर्धारक मुख्यत: तीन प्रकार के होते है।

(i) प्राकृतिक पर्यावरण

(ii) सांस्कृतिक पर्यावरण

(iii) सामाजिक पर्यावरण

(2.) परिवार का प्रभाव :- परिवार का प्रभाव केवल व्यक्तित्व पर ही नही पड़ता वरन व्यक्तित्व समायोजन पर भी प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। यदि परिवार का परिवेश बालक के जीवन मे धैर्य, उत्साह तथा साहस का विकास करता है तो वह जीवन मे आने वाली कठिनाइयो का सामना भी समायोजित ढंग से कर लेता है।

Continue...